eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

सुभद्रा कुमारी चौहान के कथा साहित्य में स्त्रीमुक्ति की आहट और मानवीय संवेदना

[1]डॉ0 मंजुला श्रीवास्तव
[1]असि0 प्रो0–हिन्दी विभाग, दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 15 September 2023 Accepted and Reviewed: 25 September 2023, Published : 01 October 2023

Abstract

भारतीय समाज में उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय जनवादी लोकजागरण की अभिव्यक्ति, प्रतिफलन और विस्तार के रूप में मध्ययुग में पितृ सत्तात्मक पुरुष प्रधान समाज के निरंकुश, स्वेच्छाधारी, सामंती उत्पीड़न, दासता और सामाजिक पार्थक्य के विरुद्ध एक नयी स्त्री–मुक्ति चेतना के उद्भव और विकास के रूप में हुई। स्त्रियों में सुधार की आवाज उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में चंद शिक्षित, मध्यवर्गीय अभिजात वर्ग के उदार पुरुष समाज–सुधारकों और धर्म सुधार आन्दोलनों के पुरोधाओं ने उठायी। यद्यपि उस समय तक स्त्री–शिक्षा का बहुत ज्यादा प्रचार–प्रसार नहीं था, किन्तु छिटपुट महिलाएँ अपने अनुभव को साहित्य में व्यक्त अवश्य कर रही थीं। 'बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्वदेशी आन्दोलन के दौरान आम मध्यवर्ग की स्त्रियों में भी एक नया प्रबोधन, एक नयी मुक्ति चेतना, सामाजिक अधिकारों एवं समानता की नयी आकांक्षा संचारित होने लगी थी। उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग अन्त में स्त्रियों के नेतृत्व में स्त्री–अधिकार आन्दोलन कतिपय सामाजिक सुधार आन्दोलनों के रूप में और विभिन्न स्त्री कल्याणकारी संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से पंडिता रमाबाई, रमाबाई रानाडे, आनन्दीबाई जोशी, फ्रानना सारोबजी, एनी जगन्नाथ और रुक्माबाई आदि के प्रयासों से शुरू हुआ।' सुभद्रा जी ने जिस जीवन को जिया था, जो माहौल उन्होंने अपने इर्द–गिर्द पाया था, समाज की जिन रूढ़ियों के विरुद्ध उनका संघर्ष था और जो भाव उन्हें उद्वेलित कर देते थे, वही उनकी कहानी बन जाते थे, कहानी लिखने के लिए कभी सुभद्रा जी ने अलग से विषय लाने के लिए सोचा हो ऐसा उनकी कहानियों को पढ़कर नहीं लगता। सुभद्रा जी की कहानियाँ भी उनके व्यक्तित्व की भाँति स्पष्ट और दो टूक होती थीं, छलावे प्रपंच से दूर, सच के धागों से बुनी हुई । ''उनकी कहानियों में उनकी स्पष्टवादिता और सटीक भाषा में उनका स्त्रीवादी विचार इतना पारदर्शी है कि उसे किसी समीक्षक के विश्लेषण की आवश्यकता नही।

शब्द संक्षेप– सुभद्रा कुमारी चौहान, कथा साहित्य, स्त्रीमुक्ति की आहट और मानवीय संवेदना।

Introduction

सुभद्रा जी की कहानियों के यदि स्वर की बात की जाये तो उनकी कहानियों में दो ही स्वर प्रमुख रूप से मिलते हैं– एक तो देश–भक्ति का स्वर और दूसरा समाज में अपने व्यक्तितत्व को प्रतिष्ठित करने के लिये संघर्ष रत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर। बन्धन को बन्धन की सीमा तक ही महत्त्व देनेवाली सुभद्रा ने अपनी कहानियों में स्त्री–स्वातंर्त्य की बातें बहुत स्पष्टता और दृढ़ता से कहीं है– "पति चाहे जितना पढ़ा–लिखा हो, पब्लिक प्लेटफार्म पर खड़ा होकर स्त्री के समान अधिकार और स्वतंत्रता देने के विषय में चाहे जितनी लम्बी–लम्बी झाड़े पर घर के अन्दर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

पैर रखते ही पुरुष–पुरुष हो जाता है। स्त्री यदि उसकी इच्छाओं को अपनी इच्छा न बना ले, उसके इशारे पर आँख कान बन्द करके न चले तो खैर नहीं।''

'वेश्या की लड़की' में सुभद्रा जी ने प्रमोद के माध्यम से पुरुष मनोवृत्ति को और अच्छी तरह उभारा है। प्रेम का दावा करनेवाला पुरुष विवाह के बाद प्रेम शून्य होता चला जाता है क्योंकि तब घर आयी लड़की उसे अपनी निजी सम्पत्ति सी प्रतीत होने लगती है। "यौवन जनित उन्माद और लालसाएँ चिरस्थायी नहीं होती। उस उन्माद के नशे में जिसे हम प्रेम का नाम दे डालते हैं, वह वास्तव में प्रेम नहीं किन्तु वासनाओं की प्यास मात्र है।

'मंझली रानी' अभिजात समाज के सच को उजागर करनेवाली कहानी है। जहाँ पैसा तो है लेकिन इन्सानी मूल्य नहीं, भावना नहीं, केवल ऊपरी दिखावा और बाह्य आडम्बर ही उस समाज का सर्वस्व है। यह क्या कह डाला मैंने! भला किसी स्त्री का पुरुष भी मित्र हो सकता है? और यदि हो भी तो क्या समाज इसे बर्दाश्त करेगा? यहाँ तो किसी पुरुष का स्त्री से मिलना–जुलना या किसी प्रकार का व्यवहार रखना ही पाप है और यदि कोई स्त्री किसी पुरुष से प्रेम से बातचीत करती है तो वह स्त्री भ्रष्टा है, चरित्रहीन है।

'उन्मादिनी' एक ऐसी युवती की कहानी है जिसकी दृष्टि में पैसों और रुपयों से ज्यादा भावनाओं का मूल्य है और जिसका मूल्य उसे उन्मादीनी होकर चुकाना पड़ता है। "यदि अपने किसी आत्मीय के सच्चे और निःस्वार्थ प्रेम को समझने और उसका मूल्य करने को ही उन्माद कहते हैं, तो ईश्वर ऐसा उन्माद सभी को दें।

'आहुति' नामक कहानी कुन्तला नामक एक ऐसी युवती की कहानी है जिसे अपनी गरीबी के कारण अपने सुन्दर और सुघड़ होने का मूल्य एक अधेड़ पुरुष से विवाह करके चुकाना पड़ता है। "किन्तु वह राधेश्याम को किस प्रकार रोक सकती थी, क्योंकि वह उनकी विवाहिता पत्नी ठहरी, सात भाँवरे फिर लेने के बाद राधेश्याम को उसके शरीर की पूरी मोनापॅली–सी मिल चुकी थी न।'' सुभद्रा जी की कहानियां समय और सीमा के बंधन से परे हैं जितनी जीवंत और जितनी समय के अनुरूप वो तब थीं जब सुभद्रा जी ने उन्हें रचा था उतनी ही वो अब भी हैं। कहानियाँ पढ़ने पर एक साधारण से साधरण पाठक भी उसके शिल्प से उसके भाव से सहज ही बंधा हुआ महसूस करने लगता है, शायद इसका कारण यह है कि सुभद्रा जी के संवेदनशील व्यक्तित्व का सबसे विलक्षण तत्व उसकी सहजता था और उनकी विपरीत परिस्थितियों में यह सहजता ही उनका जीवन सम्बल बन गया था। उन्होंने अपने अधिकांश कहानियों में स्त्री के उस पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है जिसकी तड़प से स्त्री अन्दर से अन्दर मृतप्राय हो जाती है, उसकी इच्छाएँ, उसकी लालसाएँ व्यक्त होने से पहले ही कुंठित हो जाती हैं। वही पीड़ा ऐसी है जो सूई के नोक की तरह प्रतिपल स्त्री को छेदती हुई उसके व्यक्तित्व का क्षरण करने में सफल हो ही जाती है और जो कुछ शेष बचता है वह अस्थियों से भी गया– गुजरा होता है। उनकी 'दृष्टिकोण' कहानी पढ़ने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो सुभद्रा जी स्वयं उसकी निर्मला हो। "निर्मला विश्वप्रेम की उपासिका थी। संसार में सबके लिए उनके भाव समान थे। उसके हृदय में अपने पराये का भेद– भाव न था, स्वभाव से ही वह मिलनसार, सरल, हँसमुख और नेक थी। साधारण पढ़ी–लिखी थी। निःसन्देह सुभद्रा कुमारी चौहान

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 10, October 2023

का हिन्दी साहित्य में एक अमिट स्थान है, उन्होंने ठेठ हिन्दी के ठाठ को नहीं बल्कि उसकी मूल प्रतिज्ञाओं को अपनाया था। उनकी कहानियाँ बगैर किसी नारेबाजी के स्त्री की दुर्दशा, शोषण और दमन को तो वाणी देती ही हैं साथ ही अन्तस् के कोने में अँखुआते या धुंधुआते विद्रोह की भी पहचान कराती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ हिन्दी के महिला– लेखन में मुक्ति चेतना की आहट को समझने के लिए एक जरूरी दस्तावेज हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. कथादेश– एक विद्रोहिणी कवयित्री के सामाजिक सरोकारों का पुनर्पाठ अक्टूबर–2004
2. मिला तेज से तेज–सुधा चौहान–123, 124
3. मंगला, सुभद्रा समग्र–पृष्ठ 259
4. वेश्या की लड़की, पृष्ठ सुभद्रा । समग्र पृष्ठ 115
5. उन्मादिनी, सुभद्रा समग्र–पृष्ठ 106
6. आहुति–पृष्ठ 65
7. पथ के साथी महादेवी वर्मा–पृष्ठ 44